रामायगा-सन्देश

या फ्रेस-राज्य

"मो सम दीन न दीनहित, तुम्ह समान रघुवीर। अस विचारि रघुवंश-मणि, हरह विषम-भव-भीर॥"

> लेखक— सुर्यं सारायण